तबादला रद्द हो गया

ब्रह्माकुमार विश्वामित्र,
थाना सीकरी, जिला भरतपुर (राज.)

मुझ आत्मा को ज्ञान में आये दो साल हुये हैं। राजस्थान पुलिस में सर्विस करता हूँ। मेरी पत्नी रजनी, गीता पाठशाला में रोज़ मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) सुनने जाती थी। वह मुझ आत्मा को घर आकर मुरली में बताये बाबा के महावाक्य सुनाती थी और राजयोग के बारे में बताती थी पर मुझ आत्मा को समझ में नहीं आते थे। जाति से ब्राह्मण होने के कारण सब धार्मिक ग्रंथ जैसे रामायण, गीता, महाभारत, पुराण आदि का अध्ययन मैंने कर रखा था और इन्हीं को ज्ञान समझ लिया था। सुबह-शाम सब देवी, देवताओं की आरती करता था, फिर भी मन में डर बना रहता था कि कोई देवता नाराज़ ना हो जाए। पत्नी मुझसे कहती थी कि आपको परमपिता परमात्मा शिव बाबा बुला रहे हैं, उनके पास सब प्रश्नों का जवाब है पर मैंने उनकी बातों पर कभी ध्यान नहीं दिया।

बाबा का बच्चा बनने का वायदा तुरन्त कर लिया

वर्ष 2011 में अचानक मेरा तबादला सीकरी से बाहर हो गया। अभी सीकरी आये मुझे एक साल ही हुआ था। मैं अपने परिवार को छोड़कर बाहर नहीं जाना चाहता था इसलिए परेशान हो गया। पत्नी को बताया तो कहने लगी, कोई बात नहीं, जो बाबा ने किया, अच्छा ही किया है। हम दोनों गीता पाठशाला सीकरी में गये, वहाँ ब्रह्माकुमारी बहन से मिले। हमने मुरली भी सुनी व योग भी किया। दीदी को बताया कि मन तो नहीं कर रहा परन्तु मजबूरन कल मुझे नये स्थान पर कार्यभार सम्भालना होगा। उन्होंने कहा, आपके लिए शिव बाबा के हम सब बच्चे, योग द्वारा शिव बाबा से निवेदन कर सकते हैं। बाबा कुछ भी कर सकते हैं पर आपको बाबा का बच्चा बनना होगा। मैंने मन में सोचा, तबादला रुकना तो है नहीं और तुरन्त वायदा कर लिया कि अगर मेरा तबादला रुक गया तो मैं बाबा का बच्चा बन जाऊँगा और बाबा की श्रीमत पर चलूँगा। सुबह जैसे ही मैं थाने पर गया तो साथियों ने बताया कि आपका तबादला रद्द हो गया है। मेरे को विश्वास नहीं हुआ। आदेश देखे तो यही थे। मैंने सोचा, ऐसा भी कभी होता है, बाबा क्या ऐसा भी कर सकते हैं? उसी दिन से मैं बाबा का बच्चा तो बन गया परन्तु अपनी शंका को दूर करने के लिए तबादले के निमित्त अधिकारी के पास गया। उनसे निवेदन कर पूछा कि तबादला रद्द होने का कारण क्या है। उन्होंने बताया कि मेरे मन में विचार आया कि जो कल विश्वामित्र का तबादला किया गया है, वह गलत है। फाइल मंगाकर उसे रद्द कर दिया। इसमें आपकी कोई सिफारिश नहीं आई थी।

कार्य के प्रति ईमानदारी

मुझ आत्मा ने मान लिया कि बाबा कुछ भी कर सकते हैं। इसके बाद गांव इमलाडी में, पोखर वाले मन्दिर में 60 आत्माओं के साथ मैंने सात दिन का कोर्स कर लिया। पहले तो मैं केवल जाति से ब्राह्मण था, अब कर्मों से भी ब्राह्मण बन गया। शास्त्रों में जो पढ़ा था उसका भी सही अर्थ पता चल गया। अब मैं रोज़ सुबह 4 बजे से 5 बजे तक राजयोग का अभ्यास करने लगा हूँ। सुबह 6 बजे से 7.30 बजे तक व शाम को 8 बजे से 9 बजे तक रोज़ाना मुरली सुनता हूँ। परमपिता परमात्मा की श्रीमत पर चल कर पूरी लगन व ईमानदारी से राजस्थान पुलिस में रह कम्प्यूटर ऑपरेटर की व अन्य ड्यूटी कर रहा हूँ। ज्ञान में आने के बाद आत्मा को पवित्र बनाने के लिए अपने मन, वचन व कर्म पर ध्यान दिया है। मन में निश्चित किया है कि किसी को भी गाली नहीं दूँगा व अपने काम के प्रति ईमानदार रहूँगा, अपने वेतन से ही परिवार का पालन व अन्य सेवा करूँगा। दो साल से मैंने किसी को भी गाली नहीं दी है व लोगों को समझाता हूँ कि गाली देना पाप है। दो

व्यक्ति जब झगड़ा करते हैं, वहाँ पर माँ, बहन, बेटी मौजूद नहीं होती, फिर भी हम उन्हें गाली देते हैं। अपराधी को सज़ा मिलनी चाहिये उसके परिवार को नहीं। जब से बाबा का बच्चा बना हूँ, मेरा जीवन ही बदल गया है। अब तो अमीर, गरीब, जाति, धर्म, लिंग का भेदभाव ना कर सबकी सेवा कर रहा हूँ। अब मैं अपने जीवन से सन्तुष्ट हूँ। जो पाना था वह मुझ आत्मा ने पा लिया है। मेरी सब भाई-बहनों से प्रार्थना है कि नौकरी करते हुए भी, ज्ञान में चल कर, अपने आप में सुधार लाकर हम मानव से देवता बन सकते हैं।

राक्षस व देवता में अन्तर

ईश्वरीय ज्ञान में आने के बाद समझ में आया है कि राक्षसों के चित्रों में उन्हें सींग, दांत, नाखून सहित भयंकर रूप वाले क्यों दिखाया जाता है। क्या कभी ऐसे राक्षस थे? अगर ऐसे होते तो ज़रूर आज भी उनका वंश होता। राक्षस व देवता आदतों और संस्कारों के कारण मानव के ही नाम हैं। सींग का मतलब है आक्रामक होना, बिना कारण के किसी पर हमला कर नुकसान पहुँचाना। लम्बे दांतों का मतलब है माँसाहारी होना, दाँतों से चीरफाड़ करने वाला होना। लम्बे नाखून का मतलब है चोरी, लूट करने वाला व लोगों की सुख, शान्ति छीनने वाला। देवता का मतलब है देने वाला। शिक्षा, प्रेरणा, सलाह, मदद व समय और परिस्थिति के अनुसार सहयोग देने वाला। देवता लेता नहीं है। जिस व्यक्ति में ये लक्षण हों वह देवता है। जिस व्यक्ति को आत्मज्ञान व परमात्मा का ज्ञान हो गया वह देवता है। जो देह अभिमान के कारण गलत कार्य करता है वह राक्षस है। ☺

अहंकार का बोझ

ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

रामगोपाल और दौलतराम बचपन के मित्र थे। एक दिन बचपन में ही मनमुटाव के कारण उनमें बातचीत बन्द हो गई थी। इस बात को 35 वर्ष हो गए थे। इसी बीच दौलतराम गम्भीर रूप से बीमार पड़ गया। डॉक्टरों ने जवाब दे दिया। अस्पताल के बिस्तर पर लेटे-लेटे वह बीते जीवन के बारे में सोचता और अपने मित्र रामगोपाल के साथ छोटी-सी बात पर अहंकारवश हुए मनमुटाव की याद उसे सालती रहती। उसे लगा कि दिल पर बोझ लेकर मरना ठीक नहीं अत: मेल-मिलाप कर लेना चाहिए।

दौलतराम का सन्देश पहुँचा तो रामगोपाल मिलने चला आया। बीमार दौलतराम ने माफी मांगी तो मित्र ने भी अफसोस जताते हुए गिले-शिकवे भुला देने का भरोसा दिलाया। दोनों ने खूब बातें की। रामगोपाल विदा लेने लगा तो बीमार दौलतराम ने बिस्तर पर लेटे-लेटे ही चिल्लाकर कहा, रामगोपाल, एक बात याद रखना, अगर मेरी मौत न आई होती तो मैं माफी नहीं मांगता। सच ही कहा गया है, इन्सान दिल पर बोझ लेकर मरना नहीं चाहता किन्तु जिएगा बोझ ढोते-ढोते ही।

अहंकार बुद्धि के लिए विष है। वह त्रुटि और अपराधों का पोषण करता है। अहंकारी व्यक्ति सिर्फ पाना चाहता है, देना नहीं। वह अन्तत: भिखारी है। वासना, तृष्णा, राग, द्वेष, कलह आदि अहंकार की ही देन हैं। इसलिए अहंकारी ईश्वर से सदा दूर हटता जाता है। सूक्ष्म अहंकार भी मन की स्थिति को डाँवाँडोल करता है। अहंकार का बहिष्कार कर निश्छल-निर्मल जीवन जीने में सच्चा आनन्द है। ☺